REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

मराठा शक्ति के उद्भव व विकास का मूल्यांकन

रविकान्त कुमार
शोध छात्र , इतिहास विभाग , मगध विश्वविद्यालय, बोधगया.

प्रस्तावना :

मराठा शक्ति के उद्भव में मराठा राज्य का चारित्रिक दोष, मराठो के राज्य में कतिपय चारित्रिक दुर्गुण थे, जिन्होने इनके पटन में अहम् भूमिका निभाई उनमें जाति के आधार पर कोई संगठन नही बन सका। उन्होने सामाजिक उन्नति एवं शिक्षा आदि के विकास के लिए कुछ नही किए।

मराठा राज्य के लोगो की एकता स्वाभाविक नही वल्कि कृत्रिम एवं आकस्मिक अतएव अनिश्चित थी। यह एकता शासक के असाधारण व्यक्तित्व पर निर्भर करती थी और जब देश ने अतिमानवो को जन्म देना बंद कर दिया तो यह एकता देश से लुप्त हो गई। विशाल मराठा साम्राज्य का उद्भव का संगठन सामंती व्यवस्था के आधार पर हुआ था। जबतक केन्द्र शक्तिशाली रहा। यह व्यवस्था कार्य करती रही और मराठा संगठित होते रहे। परंतु बाद में जब केन्द्र शक्तिहीन हो गया तो विकेन्द्रीकरण की प्रवृति जोर पकड़ने लगी। पेशवा धीरे–धीरे इस संघ का नाम मात्र का प्रधान रह गए। अभी सरदार स्वतंत्र राजाओं की तरह आचरण करने लगे बाजीराव के मरने के बाद मराठो में संगठन एवं एकता का अभाव हो गया व्यक्तिगत स्वार्थ, कलह, षडयंत्र आदि के कारण मराठो का नैतिक पतन प्रारंभ हो गया। मराठो ने शिवाजी के आदर्शो को भुला दिए। एकता एवं संगठन के अभाव में मराठा संघ का पटना अवश्य भावी हो गया।

1. राष्ट्रीयता की अभावः–

मराठो में दिन प्रतिदिन राष्ट्रीयता की भावना का लोप होता गया। उन्होने शिवाजी के आदर्श मराठा सामाज्य और हिन्दू पद पादशाही को भुला दिया। उनके शत्रु अंग्रेजो में यह भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। कभी–कभी मराठा या उनके सरकार पैसे के लिए निजाम अंग्रेजो की सेना में भर्ती होकर मराठो के विरूद्ध ही लड़ा करते थे। कतिपय मराठो ने देश से विश्वासघात किया और जमीन तथा पैसे के लालच में अंग्रेजो की भुखमरी की। मराठो में राष्ट्र प्रेम की भावना का अभाव था। वे धार्मिक एवं जातिगत वफादारी से कभी ऊपर नही उठ पाए।

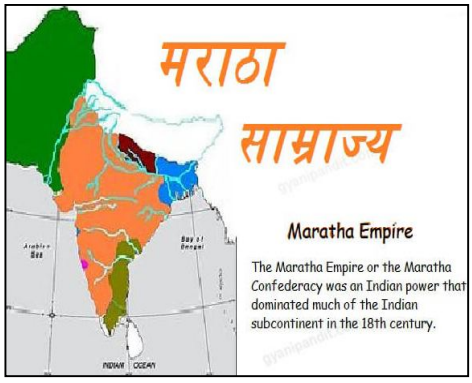

2.अनुशासनहीनताः–

मराठो में अनुशासनहीनता प्रवेश कर गई थी। उन्होने सहयोग एवं संगठन की भावना को व्यक्तिगत स्वार्थ, अंहकार एवं सम्मान की बलिवेदी पर कुर्बान कर दिया। पेशवा, होल्कर, सिंधिया एवं भोसले में इतना अधिक मतभेद था कि वे एक दुसरे की कोई बात सुनने के लिए तैयार न थे। वे नेतृत्व के लिए हमेशा आपस में लड़कर अपनी शक्ति का अपव्यय करते थे, तथा अपने अंहकार की तृषि के लिए राष्ट्रद्रोह करने के लिए भी तैयार रहते थे।

दोषपूर्णसैन्य संगठनः– मराठो का सैनिक संगठन दोषपूर्ण था,

उनके पास आधुनिक ढंग के नवीनतम् हथियारो से लैस सेना का अभाव था। उनके लड़ने भिड़ने के हथियार एकदम पुराने थे। कुछ इतिहासकारो के अनुसार मराठो की पराजय का एक मुख्य कारण था। मराठा यु परति में सिद्धहस्त थे। लेकिन बदली हुई परिस्थिति में गुरिल्ला नीति को जारी रखा असंभव था। उन्होने पागल ढंग से अपनी सेना को सुसंगठित करने का प्रयास किया। पर इसे पूरी तरह नही पा सके। इस प्रकार उनका सैन्य संगठन एवं युद्ध कला ना तो पुराना रहा और ना ही आधुनिकतम बन सका। अपनी सेना को आधुनिक बनाने के चक्कर में वे पुर्तगालियों तथा फ्रांसीसी विशेषज्ञों पर निर्भर रहने लगे। जिन्होने आवश्यकता के सन्य उन्हे धोखा दिया।

3.मराठा शक्ति मराठा युद्ध किसी भी युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। आस–पास के क्षेत्रों का विशप भौगोलिक सान नही था। इसके अभाव में मराठे युद्ध के समय गंभीर स्थिति में फंस जाते थे। इसके विपरीत अंग्रेजों को मराठा राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति का पूरा सान था। इसी सान के आधार भारत में जातियों का एक समूह मुख्य रूप से महाराष्ट्र राज्य में रहता था। मराठा आंग युद्ध मराठा शक्ति ब्रिट्रिश राज्य करत के एक अप्रशिक्षित नृवंशविद वैज्ञानिक रोबर्ट बाणे रसेल, जो वैदिक साहित्य पर बड़े पैमाने पर अपने शोध का आधार था, मराठो को 96 विभिन्न कुलो में विभाजित किया जाता है। 17वीं शताब्दी में यह डेक्कन सल्तनत की सेनाओं की सेनाओं में सेवा करने वाले सैनिको के लिए एक पद के रूप में उभरा। शिवाजी के पिता शहाजी सहित कई मराठा योद्धा, मूल रूप से उन सेनाओं में काम करते थे। मध्य 1660 के दशक तक, शिवाजी ने एक स्वतंत्र मराठा राज्य स्थापित किया। उनकी शताब्दी एक तो मराठा युद्ध 1817–1818 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अपनी घर तक भारत में कमान संभाली जाने वाली प्रमुख शक्ति बनेगी।

4.9वीं शताब्दी तक, ब्रिटिश प्रशासनिक रिकॉंडो में मराठा शद्द की कई व्याख्याएँ थी। 1882 के 61वें जिला गैजेटियर, में, विभिन्न जातियों में कुलीन परतो को निरूपित करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया गया था। कृषि जाति में मराठा कृषि, कोली जाति के भीतर मराठा कोली और इसी तरह पुणे जिले में कुणबी और मराठा कोली मराठा कुनबी जाती परिसर को जन्म दे, कर पर्चाय बन गया था। 1882 के पुणे जिला गैजेटियर ने कुणब्रिस 1901 की जनगणना में मराठा–कुनबी जाति परिसर के भीतर के दर्जा के साथ राजपूत वंश का दावा किया और शासकों, अधिकारियों और जमींदारों को शामिल किया।

धीरे–धीरे मराठा शब्द एक अंतर्जातीय जाति को दर्शाया जाता था। 1900 के बाद से, सत्य शोधक समाज आन्दोलन ने मराठो को गेरे ब्राह्मण समूहो की एक व्यापक सामाजिक श्रेणी के रूप में परिभाषित किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में इन गैर–ब्राह्मणो ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रतिष्ठा प्राप्त की। स्वतंत्र भारत में महाराष्ट्र में नवगठित राज्य में मराठो का प्रभाव–शाली राज्नीतिक दल बन गया।

5.देशी राज्यों की शत्रुताः–

मराठा देश की अपने बड़ी ताकत समझे जाते थे। उनसे आशा की जाती थी कि वे अपने नेतृत्व में देशी शक्तियों का संगठन कर अंग्रेजो को भारत से निकाल बाहर करेगें। लेकिन यह महत्पूर्ण तथ्य है। कि अंग्रेजो के विरूद्ध शुरू में मराठो को किसी विदेशी राज्य यहां तक कि राजपूतो का भी सहयोग था समर्थन नही प्राप्त हुआ। इसका कारण यह था कि मराठा आरंभ्य से ही राजपूतों, सिक्खो तथा अन्य मुसलमान शासको के राज्य में लूटमार मचाते रहे थे।

किसी भी देश या किसी आदोलन की सफलता योग्य नेतृत्व पर निर्भर करती है। दुर्भाग्य से अपने सुयोग्य नेताओ की आकस्मिक मृत्यु से मराठे कुशल नेत्त्व से वंचित हो गए। 19वीं शताब्दी तक, वाजीराव प्रथम, माधवराव प्रथम, महादजी सिधिया और नाना फड़नवीस जैसे सुयोग्य नेता मराठो के बीच से उठ चुके थे और उनके स्थान पर बाजीराव द्वितीय जैसे स्वार्थी तथा अयोग्य नेता कर्णधार बन गए थे।

6. अंग्रेजो की साधनः–

संपन्नता एवं नीति कुशलता मराठो की उपर्युक्त कमजोरियों के विपरीत अंग्रेज हर तरह से साक्षी थे। उनमें एकता थी, संगठन थ, उच्च कोटी की सैनिक शक्ति और सबसे बढकर राष्ट्रीयता की भावना थी, जिसके कारण मुठ्ीभर अंग्रेजो के सामने मराठा नही टिक सके और अंग्रेजो ने उन पर अपना आधिपत्य जमा लिया।

मराठो शक्ति के पतनः– अंग्रेजो ने भारत का साम्राज्य के बाद मुगल साम्राज्य विस्तार तितर–बितर हो गया। मुगल साम्राज्य काफी तीव्रगति से पतन के गर्त में गिरा और उसका स्थान उतनी ही शीघ्रता से उठती हुई मराठा शक्ति ने ले लिया। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारत में मराठो की शक्ति शाली सता ही बची हुई थी। जिस समय अंग्रेज अपनी सुरक्षा के लिए फ्रांसीसियों से युद्ध कर रहे थे। अथवा बंगाल के नवाब के विरूद्ध षड्यंत्र में व्यस्त थे उस समय के भाग्य विद्याता मराठे ही थे। वे सम्पूर्ण भारत पर शासन नही करते थे। किन्तु सम्पूर्ण भारत उनसे आतंकित था। वे भारत के अयी भागों से चौथा, सरदेशमुखी नामक कर वसूलते थे। गुजरात से बंगाल तक और पंजाब से कुमारी अन्तरीप तक मराठो का प्रभाव था। अवध, बंगाल, कर्नाटक, हैदरावाद और मैसूर के शासक मराठो को कर देते थे। गुजरात, मालवा, बुन्देलखण्ड और महाराष्ट्र पर उनका आधिपत्य था।

7. मुगल साम्राज्य के ध्वंआवशेषः– पर मराठो ने अपने राजनीतिक प्रभुत्व की इमारत बड़ी करने की चेष्टा की लेकिन वह इमारत बनने से पहले हीं लड़खड़ाकर भूमिगत हो गयी। भारत की यह शक्ति, जिससने प्रथम तीन पेशावाओ के समय सम्पूर्ण भारत को अपने पैरोतले रौंद दिया था, अंग्रेजो के प्रथम प्रहार से ही लड़खड़ा गयी। अंग्रेजो ने प्रथम युद्ध में ही मराठा शक्ति की पुर्णतः स्पष्ट हो गयी थी। और द्वितीय युद्ध के अवसर पर लजि वेलेजली के इंगलैण्ड वापस चले जाने के कारण वे बच गये थे, अन्यथा उनकी शक्ति तो उसी समय तोड़ दी जाती। भविष्य में उन्होने कभी अंग्रेजी सता के विरोध का साहस नही किया। मराठा सरदारो के राज्य समिति कर दिये गये तथा उनके राज्य में अंग्रेजी सेनाऐं तैनात की गयी। उनकी आंतरिक नीति और विदेशनीति पर अंग्रेजो का नियंत्रण था। पेशवा पद समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत को आंतक्ति करने वाले मराठो के पास बन चुके थे।

8. मराठा शक्ति की आंतरिक दुर्बलताः–

मराठा की सबसे बड़ी दुर्बलता स्वंय अपनी और अपने राज्य की थी। मराठा राज्य एक संघ–राज्य था। मराठा सरद्वार नाम माग की जो एकता माधव राम प्रथम के समय रही, वह भी उसकी मृत्यु के बाद समारत हो गयी। मराठा संघ दुर्बल और छिनन–भिन्न हो चुका था। सिथिया, गायकवाड़, भोसले और होल्कर हमेशा एक–दुसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहते थे, उनमें एकता और आपसी संगठन का सर्वथ अभाव था।

9. मराठा सरदारो में सम्मिलित योजना बनाने और सैन्य–संचालन की योग्यता नही था। केन्द्रीय सता के अभाव में वे मनमानी करते थे। राष्ट्रीय संकट के समय भी मराठे सरदार एक न हो सके। यशवंत राव होल्कर और दौलतराव सिंधिया में अन्त तक प्रतिद्वन्दिता बनी रही। गायक वाड़ पहले ही अंग्रेजो का मित्र बन चुका था। पूना दरबार के झगड़ो से लाभी उठाकर अंग्रेजो ने एक एक कर सभी मराठा सरदारो को परास्त कर दिया। पूना दरबार के झगड़ो से लाभ उठाकर अंग्रेजो ने प्रथम मराठा युद्ध में भाग लिया। झगड़े से लाभ उठाकर पेशवा से अंग्रेजो ने बेसीन की सन्धि की। तथा द्वितीय मराठा युद्ध की सुविधा का अवसर पाया। इस प्रकार मराठो का आपसी संघर्ष एकता की कमी और केन्द्रीय सता का अभाव उनकी सबसे बड़ी दुर्बलता थी।

10. मराठो की पराजय में उनके शासन की दुर्बलता का भी बहुत बड़ा हाथ था। उन्होंने कभी अपने शासन को सुदृढ़, सुव्यवस्थित और लोकप्रिय बनाने का यत्न नही किया। उन्होने अपने नागरिको की शिक्षा, रक्षा, भौतिक उन्नति तथा नैतिक विकास की ओर ध्यान नही दिया। और न इनका उतरदायित्व ही अपने उपर लिया। मराठा राज्य बस्तुतः राज्य नही था। उनकी जंड पोली जमीन पर थी। मराठो की यह दुर्बलता उस समय और भी स्पष्ट हो गयी जब उनका मुकाबला एक संगठित यूरोपीय राजति से हुआ।

11. मराठा राज्यो का अवश्वस्थित आर्थिक संगठन :–

मराठा राज्यो का एक बड़ा दोष उनका अव्यवस्थित आर्थिक संगठन था। ठोस आर्थिक आधार और वितीय प्रबन्ध की कमी उनके पतन के अन्य महत्वपूर्ण कारण बने। मराठो ने अपने राज्य की आर्थिक व्यवस्था की और कभी ध्यान नही दिया और न कभी आर्थिक स्तर उंचा उठाने का प्रयत्न किया। आर्थिक दृढ़ता के अभाव में किसी राष्ट्र का राजनीतिक उत्थान और विकास असम्भव है। एक विस्तृत साम्राज्य के निर्माण के बाद भी मराठो ने कृषि, उद्योग और व्यापार की ओर ध्यान नही दिया। महाराष्ट्र की अधिकांश थी, इसलिए राज्य के लिए आय प्राप्त करने का कोई साधन नही था। उतर भारत के जिन उपजाउ क्षेत्रो पर मराठो का अधिकार था। वहां भी उन्होने, प्रत्यक्ष शासन स्थापित कर राज्य के आर्थिक ढांचे को सुधारने का प्रयत्न नही किया। अपने अधीन भूभाग की उचित व्यवस्था न कर मराठो ने पतन का मार्ग स्वंय तैयार कर लिया।

12. मराठो की दुर्बल सैन्य व्यवस्थाः–

मराठो के पतन का एक कारण उनकी सैनिक दुर्बलता मानी जाती है। निःसन्देह अंग्रेजो की तुलना में मराठो का सैनिक संगठन दुर्बल था। अंग्रेजो की तरह न तो उनकी सेना संगठित था।

13. मराठो की शक्ति ने उतरोत्तर हो रहा था। आपसी मतभेद और पराज्य के बावजूद मराठा सरदार अपनी शक्ति को संगठित करने का कोई प्रयास नही कर रहे थे। स्वार्थपरता के कारण मराठो का आन्तरिक शासन एवं सैनिक शक्ति लड़खड़ा गयी थी। वेलेजली ने सहायक सन्धि के माध्यम से मराठा की शक्ति छिन्न–भिन्न कर दी और अंग्रेजो का संरक्षण स्वीकार करने पर विवश कर दिया था। इन व्यक्तियो ने शासन व्यवस्था की अराजकता की स्थिति में पहुंचा दिया था।

14. मराठा सर पार अंग्रेजो से मुठभेड़ की स्थिति में नही थे। और अंग्रेजो से अपसे मैत्री भाव दिखाते हुए मन में उनसे घृणा के करते थे।

मराठा शक्ति के प्रारंभ होने से पहले ही अंग्रेजो ने कूटनीति और दबाव द्वारा अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। चूना की सन्धि पेशवा बाजीराव द्वितीय को दुर्बलता बना दिया। 1817 ई0 को किरकी में स्थित रेजीउेसी पर आक्रमण कर दिया।

15. जिस समय मराठो का संघर्ष अंग्रेजो से प्रारंभ हुआ। मराठा अपने जातीय गुण खो चुके थे। समानता, साहस, कमेठता, संयम और कठोर जीवन ने उन्हे मुगल साम्राज्य के विरूद्ध सफलता में सहायता की थी। और उन्हे महान कमाया लेकिन वे ये गुण खो चुके थे। सामंती प्रथा और उेंचे नीच की भावना ने उनकी सामाजिक एकता नट कर दी गयी। और वे पूर्ववर्ती आदर्य भूल चुके थे मराठो की बहुत बड़ी भूल थी कि उन्होने राजपूत राज्यो की सहायता नही बरती। क्योंकि बेलोजली ने सहायक सन्धि की नीति के द्वारा देशी राज्यो में फ्रांसीसियो का प्रभाव समाप्त कर दिया था। जिसमें शक्ति के उद्भव व विकास का मूल्यांकन का विश्लेषण हुआ।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. H. Mukherjee : India struggles for freedom P-48.
2. P. Sitaramayya: History of the congress P.-8
3. Sir John Kaye : Indian Mutiny, vol. I., P.-381.
4. G.N. Singh : Op. Cit., P. 129.
5. Keith : Speeches and documents on indian policy, vol. I, pp-383-86.
6. J.L. Nehru : Op. cit, P-390.
7. Sri lvor jennings : British morden indian 1959, p. 82.

रविकान्त कुमार
शोध छात्र , इतिहास विभाग , मगध विश्वविद्यालय, बोधगया.